JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में महिला-नेतृत्व वाले दुग्ध स्टार्टअप्स:चुनौतियाँ एवं विकास की संभावनाएँ

नमिता सिंह[1], डॉ.देवाशीष मुख़र्जी[2]

[1] शोधार्थी, महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
[2] प्राचार्य, महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश
भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पाद देश , जहाँ दूध उत्पादन का लगभग 70-75% योगदान महिलाओं के द्वारा किया जाता है। इसके बावजूद, दूध मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की औपचारिक भागीदारी और उद्यमशीलता अत्यंत सीमित है। प्रस्तुत शोध पत्र के आधार पर, महिला उद्यमियों को वित्त तक पहुंच, तकनीकी ज्ञान, स्थित श्रृंखला और संरचना, बाजार संपर्क, सामाजिक-सांस्कृतिक बढ़े, और प्रशिक्षण की कमी जैसी प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही, डिजिटल प्रौद्योगिकी, सरकारी योजनाएं, सहकारी आंदोलन और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से व्यापक विकास की संभावनाएं भी उभर रही हैं। यह शोध नीति-निर्मित सहकारी संस्थाओं और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में महिला नेतृत्व वाले दूध स्टार्टअप की वर्तमान स्थिति, चुनौतियां एवं विकास की संभावना का विश्लेषण करता है।

शब्दकुंजी: भारत, महिला उद्यमी, तकनीकी दक्षता, सहकारी समिति, पशु स्वस्थ, महिला सशक्तिकरण, बाज़ार संरचना

प्रस्तावना:-
भारत विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 22% योगदान देता है दुग्ध क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो आठ करोड़ से अधिक परिवारों को आजीविका प्रदान करता है और जीडीपी में लगभग 5% का योगदान देता है भारत में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्य 50 %से अधिक उत्पादन के साथ लाभान्वित हो रहे है। इस क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका निर्णायक है भारत के डेयरी क्षेत्र कि इसमें महिलाओं की भूमिका बहुत सशक्त है। डेयरी फार्मिंग में काम करने वालों में लगभग 70% महिलाएं हैं, और करीब 35% महिलाएं डेयरी सहकारी समितियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। पूरे देश में, गांव के स्तर पर 48,000 से भी ज़्यादा ऐसी डेयरी सहकारी समितियां चल रही हैं जिनका नेतृत्व महिलाएं कर रही हैं, ये समितियां ग्रामीण समुदायों के भीतर समावेशी विकास और सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही हैं।(भारत का डेयरी क्षेत्र, n.d., p. 2025) महिला नेतृत्व वाली डेयरी सहकारी समिति उनके सशक्तिकरण के लिए शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है श्वेत क्रांति 2.0 के तहत प्रत्येक गांव पंचायत में डेयरी सहकारी समितियां की स्थापना करके महिला सशक्तिकरण के लिए अधिक से अधिक महिला डेयरी किसानों को संगठित डेयरी सहकारी में लाया जा रहा है भारत की डेयरी में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसका उद्देश्य अगले 5 वर्षों में डेयरी सहकारी समितियां के दूध को मौजूदा स्तर पर 50% तक बढ़ाना है , अच्छादित क्षेत्रों में डेयरी किसानों को बाजार पहुंच और संगठित कर हिस्सेदारी (डेयरी सहकारी समितियों में महिलाएं, n.d.)महिला नेतृत्व वाले दूध स्टार्टअप मुख्यतः उभर रहे हैं यह स्टार्टअप न केवल दूध संग्रहण प्रसंस्करण और विपणन करती है बल्कि मूल्य संबंधित उत्पाद डेयरी जैसे दही पनीर की लस्सी तथा प्लांट बेस्ड अल्टरनेटिव भी तैयार करती है विश्व की सबसे बड़ी महिला स्वामित्व वाली दुग्ध कंपनी आंद्र प्रदेश से श्रीजा महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड इसका उत्कृष्ट उदाहरण है केंद्र सरकार की योजनाएं महिला सशक्तिकरण को मजबूत आधार दे रही हैं दीनदयाल अत्यंत योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 81000 से अधिक महिला किसानों को दुग्ध मूल्य श्रृंखला विकास में सहायता दी जा रही है।(*श्रीजा - महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड - श्रीजा - महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड*, n.d., p. 2026)

अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय डेयरी उद्योग में महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करना।
- महिला नेतृत्व वाले दूध स्टार्टअप द्वारा सामना की जाने वाली वित्तीचुनौतियों और उच्च उत्पादन लागत का विश्लेषण करना।
- भारत में महिला नेतृत्व वाले दूध स्टार्टअप की विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- सरकारीयोजनाओं, सहकारी समितियों, और SHG के माध्यम से स्टार्टअप को मिलने वाले समर्थन का आकलन करना।
- महिला सशक्तिकरण आय वृद्धिऔर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्टार्टअप के योगदान का परीक्षण करना।

शोध पुर्वालोकन

(Sing & Singh, 2015)यह स्टडी यूपी के एटा जिले में की गई थी। एटा जिले में कम्युनिटी डेवलपमेंट ब्लॉक हैं, जैसे शीतलपुर, सकीट, अवागढ़, जलेसर, निधौली कलां, मरहरा, अलीगंज और जैथरा। कुल मिलाकर, 220 सदस्य इस अध्ययन के लिए नमूना आकार बनाते हैं कुल 220 उत्तरदाताओं (SHG की महिला सदस्यों) का चयन किया गया और प्राथमिक डेटा व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया आंकड़ों का अवलोकन स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि उत्तरदाताओं का एक बहुत बड़ा बहुमत—यानी 91.36%—डेयरी व्यवसाय से जुड़ने से पहले सशक्तिकरण के निम्न स्तर पर था, जबकि केवल 8.64% लोग सशक्तिकरण के मध्यम स्तर पर थे।

(Singh et al., 2017)जम्मू-कश्मीर राज्य के डेयरी उद्योग सहसंबंध विश्लेषण (Correlation analysis) से पता चला कि पशुपालन पद्धतियों के संबंध में, पृष्ठभूमि से जुड़े कारकों और आदिवासी डेयरी फार्म महिलाओं के ज्ञान व सशक्तिकरण के स्तर के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। इन महिलाओं को अनौपचारिक शिक्षा और परामर्श की आवश्यकता है, ताकि उनमें अपनी ताकतों और कमजोरियों के प्रति व्यक्तिगत व सामाजिक जागरूकता, डेयरी पद्धतियों के प्रति वैज्ञानिक चेतना, और सबसे बढ़कर—एक बेहतर जीवन-स्तर जीने के लिए—अपने ज्ञान व सशक्तिकरण के स्तर को बढ़ाने हेतु सक्रिय कदम उठाने की ललक पैदा की जा सके।

(Upreti & Bhardwaj, 2018)उत्तराखंड राज्य में विकास के प्रयासों के तहत, गुजरात के सहकारी डेयरी फार्मिंग के अग्रणी 'आनंद' मॉडल से प्रेरित होकर, 1025 महिला डेयरी सहकारी समितियों (WDCS) का गठन किया गया। WDCS की सदस्यों और गैर-सदस्यों के सशक्तिकरण के स्तर में काफी अंतर था। सदस्य, गैर-सदस्यों की तुलना में डेयरी व्यवसाय से अधिक आय अर्जित करने में सक्षम थीं। डेयरी क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं; ये समितियाँ उन्हें आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाती हैं और डेयरी महिलाओं के सशक्तिकरण में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

(Shukla, 2022)के अनुसार छतीशगढ में देवभोग डेयरी सहकारी समितियों द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं ने महिलाओं की क्षमता बढ़ाई है, डेयरी उद्योग को सुव्यवस्थित किया है, और महिलाओं के ज्ञान में सुधार किया है। महिलाएं अब अपने अधिकारों और परिस्थितियों के प्रति अधिक जागरूक हैं और डेयरी उद्योग में काम कर रही हैं डेयरी उद्योग महिलाओं को सशक्त बनाने में एक विशिष्ट भूमिका निभाता

(Umadevi & Rajender, 2023)के अनुसार तेलंगाना की महिला सदस्यों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, क्योंकि कई ऐसे कारक बढ़े जिनका सीधा असर उनकी आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। हालाँकि, कि महिला सदस्यों से जुड़े कुछ सामाजिक-आर्थिक कारकों का उनकी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में काफ़ी योगदान रहा हो। महिला सदस्यों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में योगदान देने वाले मुख्य आर्थिक कारकों का पता लगाने के लिए, एक लीनियर रिग्रेशन मॉडल का इस्तेमाल किया गया।

भारत में महिला-नेतृत्व वाली दुग्ध स्टार्टअप्स का वर्तमान परिदृश्य

भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध बनाने वाला देश है, और महिलाओं की बिना थके मेहनत इस बड़ी डेयरी इकॉनमी की नींव है। ग्रामीण भारत में, डेयरी क्षेत्र के कुल कार्यबल में महिलाओं का योगदान 70 प्रतिशत से भी अधिक है—वे पशुओं की देखभाल करती हैं, दूध निकालती हैं और डेयरी उत्पाद तैयार करती हैं। फिर भी, पारंपरिक रूप से, इस क्षेत्र में नेतृत्व और उद्यमिता के अवसरों तक उनकी पहुँच सीमित रही है। लेकिन अब, यह परिदृश्य बदल रहा है। पिछले एक दशक में, महिलाओं के नेतृत्व वाले डेयरी स्टार्टअप्स की एक नई लहर उभरी है—जो न केवल व्यावसायिक सफलता की कहानी बयां करती है, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी प्रतीक है।

आज, पूरे देश में 500 से ज़्यादा महिलाओं के नेतृत्व वाले डेयरी स्टार्टअप सक्रिय हैं—जिनकी संख्या महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में खास तौर पर ज़्यादा है। पारंपरिक दूध की बिक्री से आगे बढ़कर, ये स्टार्टअप ऑर्गेनिक घी, प्रोबायोटिक दही, आर्टिसनल पनीर और A2 दूध जैसे प्रीमिउत्पादों में भी कदम रख रहे हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में, विभिन्न स्वयं-सहायता समूहों से निकली महिला उद्यमियों ने छोटे पैमाने के ऐसे ब्रांड बनाए हैं, जो स्थानीय बाजारों से लेकर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तक सफलतापूर्वक अपनी पहुँच बढ़ा रहे हैं।

देश भर में 48,000 से अधिक महिला-नेतृत्व वाली डेयरी सहकारी समितियाँ ग्राम स्तर पर सक्रिय हैं। NDDB डेयरी सर्विसेज ने 23 मिल्क प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइज़ेशन (MPO) को समर्थन दिया है, जिनमें से 16 पूरी तरह महिलाओं द्वारा संचालित हैं।(*India's Dairy Sector*, n.d., p. 2025)

2024 में सहकारिता मंत्रालय द्वारा शुरू की गई White Revolution 2.0 का लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में डेयरी सहकारी समितियों द्वारा दूध की खरीद में 50% की वृद्धि करना है। इसके तहत 2024-25 से 2028-29 के बीच 75,000 नई बहुउद्देशीय डेयरी सहकारी समितियाँ (MDCS) स्थापित करने की योजना है। NDBB महिला उद्यमियों के लिए यह एक संरचनात्मक नेटवर्क तैयार करेगा जिसका उपयोग वे अपने उत्पाद बेचने और सप्लाई चेन तक पहुँचने के लिए कर सकती हैं(*White Revolution 2.0 2024 - Rejuvenating The Indian Dairy Sector - IMPRI Impact And Policy Research Institute*, n.d.)

वर्ष	उत्पादन (मिलियन टन)	प्रति व्यक्ति उपलब्धता (ग्राम प्रति दिन)
2019-20	198.4	406
2020-21	210.0	427
2021-22	222.1	446
2022-23	230.6	459
2023-24	239.6	471

भारत में दूध उत्पादन और प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता

स्त्रोत (*भारत में दूध उत्पादन* | *Nddb.Coop*, 2026)

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र से आवश्यक सूचना एवं आंकड़ों का द्वितीय स्तर पर संकलन किया गहै। है यह वर्णनात्मक शोध पत्रहै। द्वितीय आंकड़ों का संग्रहण स्रोतों जैसे आर्थिक सर्वेक्षण, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, भारत सरकार विभिन्न रिपोर्ट, पशुधन डेयरी विकास से संबंधित आदि से संग्रहित किए गए हैं।

चुनौतियां एवं संभावनाएं

चुनौतियां

- शिक्षा और तकनीकी ज्ञान की कमी:- महिलाओं को कम शिक्षा और तकनिकी ज्ञान न होने के आभाव कारण चुनौति साबित हो सकती है FSSAI लाइसेंस, मिल्क टेस्टर ऐप या फीड फॉर्मुलेशन नहीं समझ आता।
- पशु संरक्षण:- किसान को पशु की उपयोगिता न होने या आर्थिक बोझ के कारण पशु को सड़क पर छोड देते है जिससे सड़क दुर्घटना और पशुहानी होती है सडको पर आवारा पशु की संख्या बढती जा रही है जिसमे गोशालाओं की कमी नज़र आती है
- बाजार पहुंच और मध्यस्थ शोषण:- प्राइवेट डेयरी 25-26रुपये में दूध लेती थी लेकिन भुगतान नहीं करती, बीच में 16% महिलाएँ बाजार तक पहुँचने में फंस जाती हैं। शहरी कस्टमर तक ब्रांड पहुँचाना बिना वाहन के साधन का आभाव है।
- वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच:- बैंक लोन के लिए कम क्रेडिट स्कोर के कारण ऋण नहीं मिलता। महिलाओं के लिए फाइनेंस पहली सबसे बड़ी बाधा है; 98% महिला व्यवसाय लघु व्यवसाय में ही रह जाते हैं।

- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादकता की समस्या:- गाँव में पशुसुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल पशुबिमा, कमजोर नस्ल, बीमारी, टीकाकरण की अनियमितता से औसत 4-5 लीटर/दिन ही उत्पादन होता है।

- जागरूकता एवं नेटवर्किंग की कमी:-महिलाओं में सरकारी योजनाओं और नेटवर्किंग के आभाव के कारण जानकारी नहीं होती है और योजनाओं का लाभ उठा नही पाती है|

संभावनाएं

- मूल्य-वर्धित उत्पादों का विशाल बाजार: घी, पनीर, दही, फ्लेवर्ड मिल्क, दूध पावडर का अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में मांग तेज़ी से बढ़ रही है दूध की शेल्फ लाइफ बढ़ जाती है लम्बे समय तक स्टोर कर के रख सकते है |
- स्वयं सहायता समूह एवं महिला डेयरी सहकारी समिति मॉडल:- 10-20 महिलाएँ मिलकर आसानी से शुरू कर सकती हैं; सामूहिक ऋण और ट्रेनिंग मिलती है।इससे महिला उधमिता का विकास होगा और रोजगार के साधन बढ़ेंगे|

- महिलाओं के लिए विशेष फंडिंग:- महिलाओं को व्यवसाय के लिए सरकार की और से वित्तपोषण और सब्सिडरी मिलती है जिससे महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम हो सकती है

- मिल्क पार्लर खोलना :- गाँवों और शहरी में मिल्क पार्लर खोलने पर लस्सी,आइस क्रीम, दूध ,दही बेचने पर रोजगार के अवसर खुलेंगे

- ऑनलाइन प्रशिक्षण:- मूल्यवर्धित उत्पाद बनाए के लिए दूर बैठे किसानो और महिलाओं को ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान का विस्तार होगा और घर बैठे आसानी से उत्पाद बना सके|

निष्कर्ष

महिलाएँ दुग्ध क्षेत्र की रीढ़ हैं:- भारत में 70-90% दुग्ध कार्यबल महिलाएँ हैं; उनकी लीडरशिप से क्षेत्र और मजबूत होगा।

आर्थिक सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम — महिला-नेतृत्व वाले दुग्ध स्टार्टअप से दैनिक स्थिर आय, बचत और परिवार में निर्णय शक्ति बढ़ती है।

ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में योगदान — ये स्टार्टअप रोजगार सृजन, पोषण सुधार और बेटियों की शिक्षा में मदद करते कर सकते है .आर्थिक रूप से मजबूत हो सकते है

स्टार्टअप इकोसिस्टम में योगदान — दुग्ध स्टार्टअप महिलाओं को मूल्य-वर्धित उत्पादों और ई-कॉमर्स से वैश्विक बाजार तक ले जा सकते हैं।

सुझाव

- महिला-केंद्रित फाइनेंसिंग बढ़ाएँ:- महिला उद्यमिता मंच के तहत बिना कोलेटरल लोन को और आसान बनाएँ; विशेष डेयरी स्टार्टअप फंड को दुग्ध क्षेत्र में फोकस करें।

- स्वयं सहायता समूह एवं महिला डेयरी सहकारी समिति मॉडल को मजबूत करें — SHG से जुड़ी महिलाओं को मिल्क प्रोसेसिंग यूनिट और वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स (घी, पनीर) के लिए ट्रेनिंग + सब्सिडी दें

- महिला-केंद्रित सप्लाई चेन बनाएँ — मिल्क पूलिंग से प्रोसेसिंग और डायरेक्ट टू कंज्यूमर तक महिलाओं का पूरा नियंत्रण; फेयर प्राइस गारंटी और बाय-प्रोडक्ट सेल (गोबर से बायोगैस/साबुन) को बढ़ावा दें।

- प्रशिक्षण और लीडरशिप डेवलपमेंट — श्वेत क्रांति 2.0 के तहत विशेष महिला लीडरशिप ट्रेनिंग; प्रदर्शनी भ्रमण और मेंटरशिप प्रोग्राम (सफल महिला उद्यमियों से) शुरू करें।

- सामाजिक जागरूकता बढ़ाएँ — ग्रामीण स्तर पर कैंपेन चलाएँ कि महिला उद्यमिता से परिवार की आय बढ़ती है; पति/परिवार को शामिल करने वाले प्रोग्राम लागू करें।

- मूल्यांकन कर राष्ट्रीय स्तर पर स्केल करें; वार्षिक रिपोर्ट और से सुधार करें।

सन्दर्भ सूची :-

India's Dairy Sector. (n.d.). Retrieved March 19, 2026, from https://www.pib.gov.in/www.pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=2172546

Shukla, D. H. (2022). *ROLE OF DAIRY SECTOR IN WOMEN EMPOWERMENT*. *10*(12).

Sing, O., & Singh, J. P. (2015). *Women Empowerment in dairying through SeIf Help Groupsx*.

Singh, D., Nain, M. S., Kour, P., Sharma, S., & Chahal, V. P. (2017). *A Study of Empowerment Level of Tribal Dairy Farm Women in J&K State*.

Umadevi, D., & Rajender, D. P. (2023). Empowerment Of Women Through Dairy Co-Operatives – A Study in Telangana State. *Educational Administration: Theory and Practice*, *29*(4), 4423–4426. https://doi.org/10.53555/kuey.v29i4.9302

Upreti, N., & Bhardwaj, N. (2018). *Women Empowerment through Women Dairy Cooperative Society in Uttarakhand*.

White Revolution 2.0 2024—Rejuvenating The Indian Dairy Sector—IMPRI Impact And Policy Research Institute. (n.d.). Retrieved March 19, 2026, from https://www.impriindia.com/insights/indian-dairy-sector/

डेयरी सहकारी समितियों में महिलाएं. (n.d.). Retrieved March 18, 2026, from http://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2238401&reg=3&lang=2

भारत का डेयरी क्षेत्र. (n.d.). Retrieved March 18, 2026, from https://www.pib.gov.in/www.pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=2172562

भारत में दूध उत्पादन | nddb.coop. (2026). https://www.nddb.coop/hi/information/stats/milkprodindia

श्रीजा—महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड—श्रीजा—महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड. (n.d.). Retrieved March 18, 2026, from https://shreejamilk.com/companyOverView.php